

भारतीय राजनीति में महिला भागीदारी

Swati Shikha

Research Scholar, Department of Political Science.

B.R.A. Bihar University, Muzaffarpur.

सार:

भारत में, वैश्वीकरण के उदय के साथ उल्लेखनीय प्रगति देखी गई है, जिसने राजनीतिक क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी को सकारात्मक रूप से प्रभावित किया है। राजनीति में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी उन्हें देश की चुनौतियों और देश को विकास की ओर ले जाने के लिए आवश्यक रणनीतियों की गहरी और अधिक प्रभावी समझ से लैस करती है। महिलाओं के लिए राजनीतिक प्रक्रियाओं में सार्थक योगदान देने के लिए, यह आवश्यक है कि उनके पास उपयुक्त कौशल और योग्यताएँ हों। महिला नेताओं के लिए एक महत्वपूर्ण कारक विभिन्न रणनीतियों और दृष्टिकोणों के बारे में उनकी जागरूकता है जो उनके समुदायों और राष्ट्र दोनों के कल्याण को बढ़ा सकते हैं। यह शोध पत्र कई प्रमुख विषयों की खोज करता है, जिसमें राजनीतिक भागीदारी की परिभाषा और महत्व, राजनीति में महिलाओं की भागीदारी का ऐतिहासिक संदर्भ और महिलाओं द्वारा राजनीतिक रूप से भाग लेने के विभिन्न तरीके शामिल हैं। इसके अलावा, यह राजनीतिक भागीदारी को प्रभावित करने वाले चर, इसे मापने के लिए उपयोग किए जाने वाले ढाँचे, महिला सशक्तिकरण में राजनीतिक भागीदारी की भूमिका की जाँच करता है और राजनीतिक क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका को मजबूत करने के लिए व्यावहारिक सिफारिशें प्रदान करता है।

मुख्य शब्द: महिलाओं की भागीदारी, भारतीय राजनीति, लैंगिक भेदभाव, राजनीतिक नेतृत्व, समावेशी शासन

परिचय

भारत में महिलाओं की स्थिति ने प्राचीन काल से कई उतार-चढ़ाव देखे हैं। प्राचीन इतिहास में उन्हें सम्मान और समान व्यवहार दिया जाता था। लेकिन मध्यकाल में उनकी स्थिति में गिरावट आई है। इस अवधि में, उन्हें कई रीति-रिवाजों और परंपराओं का पालन करना आवश्यक था, जैसे कि पर्दा प्रथा, सती, बाल विवाह आदि। स्वतंत्रता के बाद के भारत में, महिलाओं की स्थिति ने अपनी ताकत वापस पा ली और आगे बढ़ना शुरू कर दिया। महिलाओं ने जीवन के सभी क्षेत्रों जैसे राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और धार्मिक में भाग लेना शुरू कर दिया। वे उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए शिक्षण संस्थानों में दाखिला ले रहे हैं। शिक्षा के महत्व की मान्यता ने उन्हें डॉक्टर, वकील, शोधकर्ता, शिक्षक, शिक्षाविद, निदेशक, प्रशासक आदि जैसे पेशेवर बना दिया है। महिलाओं की भूमिका को मुख्य रूप से गृहस्थ के रूप में पहचाना जाता है। लेकिन, घर के कामों के कार्यान्वयन के अलावा, वे समुदाय और राष्ट्र की प्रगति और विकास में भी प्रभावी योगदान दे रहे हैं।

महिलाओं ने स्वतंत्रता आंदोलन में सच्ची भावना और अडिग दुस्साहस और साहस के साथ भाग लिया। स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए, उन्हें शोषण, विपत्तियों और संकटों का सामना करना पड़ा। दूसरे शब्दों में, ब्रिटिश शासन से स्वतंत्रता के संघर्ष में महिलाओं की भागीदारी शामिल थी और उन्होंने चुनौतियों और समस्याओं से निपटने के लिए आपस में योग्यता विकसित की। भारतीय महिलाएं, जिन्होंने राष्ट्रीय

आंदोलन में भाग लिया, शुरू में शिक्षित और उदार परिवारों से थीं। मोहनदास करमचंद गांधी द्वारा शुरू किए गए आंदोलन के आगमन के साथ इस परिप्रेक्ष्य में परिवर्तन लाया गया था। स्वतंत्रता संग्राम को एक जन आंदोलन में बदल दिया गया, जिसमें समाज के सभी वर्ग शामिल थे। इसके अलावा, इस दृष्टिकोण का प्रचलन था कि देश सच्ची स्वतंत्रता प्राप्त करने में सक्षम नहीं होगा, यदि सभी वर्ग प्रभावी रूप से भाग नहीं लेंगे। शाही शासन के खिलाफ उनका सबसे सफल अभियान नमक कर के मुद्दे पर लड़ा गया, जिसने महिलाओं को सबसे आगे लाने में योगदान दिया।

किसी भी समाज या व्यक्तियों के वर्ग की राजनीतिक भागीदारी के अर्थ और महत्व की समझ प्राप्त करते समय, यह ध्यान रखना आवश्यक है कि यह लोकतांत्रिक मूल्यों से जुड़ा है या नहीं। व्यक्तियों की राजनीतिक भागीदारी के स्तर और सीमा को प्राकृतिक और मानव निर्मित दोनों गुणों के संदर्भ में नियंत्रित किया जा सकता है। असमानताओं के प्राकृतिक कारकों पर काबू पाना व्यक्तियों के लिए संभव नहीं है, लेकिन मानव निर्मित असमानताओं का मुकाबला करना संभव है और यह केवल लोकतांत्रिक सिद्धांतों और मूल्यों को अपनाने और उनका पालन करके किया जाता है। लोकतंत्र के स्तंभ, जैसे, स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व, न्याय और आगे, मानव निर्मित असमानताओं के परिणामस्वरूप चुनौतियों और समस्याओं से अभिभूत व्यक्तियों को सहायता, समर्थन और सुरक्षा प्रदान करने के लिए पर्याप्त मजबूत हैं। इस प्रकार राजनीतिक भागीदारी की प्रभावी समझ हासिल करने के लिए, लोकतांत्रिक मूल्यों को समझना महत्वपूर्ण है।

उद्देश्य

1. भारतीय राजनीति में महिलाओं की भागीदारी को प्रभावित करने वाली बाधाओं और सक्षमताओं की जांच करना।
2. महिलाओं की नेतृत्व भूमिकाओं पर राजनीतिक दल की संबद्धता और सामाजिक समर्थन के प्रभाव का आकलन करना।

शोध पद्धति

लोकतांत्रिक राष्ट्र में एक नेता के रूप में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी का विश्लेषण करने के लिए, यह पत्र भारत में 1992 की पंचायती राज संस्थाओं (PRI) नीति का विश्लेषण करता है। यह स्थानीय स्वशासन (LSG) में महिला नेताओं के लिए विभिन्न चुनौतियों का वर्णन करता है। लोकतंत्र में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी को संबोधित करने के लिए, इस पत्र ने महिलाओं के राजनीतिक सशक्तीकरण, भागीदारी और नेतृत्व पर विभिन्न मौजूदा साहित्य का विश्लेषण किया। निर्णय लेने की प्रक्रिया में महिला नेताओं की चुनौतियों की पहचान 25 महिलाओं से प्राथमिक डेटा के आधार पर एक अनुभवजन्य अध्ययन करके की गई है, जो केरल के एक जिले इडुक्की में मतदान प्रणाली के माध्यम से पंचायत अध्यक्ष के रूप में चुनी गई थीं। मलयालम भाषा में खुले अंत वाली चर्चा के साथ एक अर्ध-संरचित साक्षात्कार आयोजित किया गया था, जो केरल राज्य की आधिकारिक भाषा है। महिला राजनेताओं के साथ चर्चा ने लोकतांत्रिक रूप से विकसित राष्ट्र में भागीदारी के लिए विशिष्ट बाधाओं का पता लगाने के लिए शोध किया। उत्तरदाताओं की विशेषताएं तालिका 1 में दी गई हैं।

तालिका 1. प्रतिभागियों की जनसांख्यिकीय और सामाजिक विशेषताएँ

सामाजिक-जनसांख्यिकीय विशेषताएँ	वर्ग	नमूने की कुल संख्या
--------------------------------	------	---------------------

लिंग	महिला	25
आयु	आयु 30 वर्ष से कम 30-39 वर्ष 40-49 वर्ष 50-59 वर्ष 60 वर्ष या उससे अधिक उम्र	2 2 10 10 1
शिक्षा	हाई स्कूल तक माध्यमिक विद्यालय डिप्लोमा विश्विद्यालयीन शिक्षा व्यावसायिक प्रशिक्षण	7 10 5 3
आय (मासिक)	€ 250 से कम € 250 से € 500 तक/ € 500 से € 1000 तक € 1000 से अधिक	3 20 2 0
पारिवारिक स्थिति	शादीशुदा बच्चों वाला बिना बच्चों के विवाहित अविवाहित विधवा	24 0 1 0
रोज़गार	कार्यरत गैर-कर्मचारी पेंशनभोगी अन्य	12 13 0 0
सामाजिक-जनसांख्यिकीय विशेषताएँ	वर्ग	नमूने की कुल संख्या
किसी भी राजनीतिक पार्टी से संबद्धता	हां नहीं	25 0
धार्मिक समूह संबद्धता	हां नहीं	18 7
अन्य संगठनात्मक नेतृत्व	हां नहीं	22 3

भारतीय राजनीति में महिलाएँ

समावेशी और प्रतिनिधि लोकतंत्र के निर्माण के लिए राजनीतिक क्षेत्र में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी महत्वपूर्ण है। फिर भी, भारत जैसे कई विकासशील देशों में, लिंग आधारित असमानताएँ उनकी पूर्ण भागीदारी को प्रतिबंधित करती रहती हैं। महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी बढ़ाने के उद्देश्य से संवैधानिक प्रावधानों और नीतिगत उपायों के बावजूद, गहरी जड़ें जमाए हुए पितृसत्तात्मक दृष्टिकोण, सामाजिक मानदंड और धार्मिक विचारधाराएँ अक्सर राजनीति में उनके प्रवेश और प्रगति में बाधा डालती हैं। इसके विपरीत, कई विकसित देशों में महिलाओं को राजनीतिक प्रतिनिधित्व और नेतृत्व के लिए व्यापक अवसर प्राप्त हैं। विधायी निकायों और निर्णय लेने वाली भूमिकाओं में महिलाओं के पर्याप्त प्रतिनिधित्व की कमी राजनीतिक सशक्तिकरण में लगातार लैंगिक अंतर को उजागर करती है। इस असमानता को दूर करने के लिए, जमीनी स्तर, विधायी और संस्थागत स्तरों पर लक्षित हस्तक्षेपों को लागू करना महत्वपूर्ण है,

ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि महिलाओं को राजनीतिक विमर्श में शामिल किया जाए, नीति और शासन को आकार देने में भी उनकी भूमिका प्रभावशाली हो।

भारतीय संसद में महिलाओं का प्रतिशत। हालाँकि, पंचायत राज संस्था अधिनियम की शुरुआत और कार्यान्वयन ने राष्ट्रीय स्तर पर महत्वपूर्ण सुधार और राजनीतिक भागीदारी नहीं लाई। यह मुख्य रूप से पितृसत्तात्मक मानसिकता और भारत के उत्तरी भाग में महिलाओं के प्रति बाधा के कारण है, जो संसद में महिलाओं के समग्र प्रतिशत में गिरावट की ओर जाता है, जो पंचायत राज संस्थाओं के पूर्व और बाद के कार्यान्वयन में महत्वपूर्ण सांख्यिकीय अंतर नहीं दिखाने का मुख्य कारण है। 1980 के दशक तक, शोधकर्ताओं और सामाजिक कार्यकर्ताओं ने महिला सशक्तीकरण के मुद्दे को उजागर करना शुरू कर दिया और 20वीं सदी तक भारतीय राजनीतिक क्षेत्र में महिलाओं की स्वतंत्रता और लैंगिक समानता पर शोध और बहस पर चर्चा होने लगी। राजनीतिक भागीदारी में वोट देने का अधिकार, प्रतिस्पर्धा करने का अधिकार, उम्मीदवारी के लिए खड़े होने का अधिकार और प्रचारक और विधायिका के सदस्य के रूप में उनकी स्थिति शामिल है।

परिणाम

26 जनवरी 1972 को बनाया गया इडुक्की केरल राज्य के 14 जिलों में से एक है। विकास गतिविधियों और सामाजिक सुरक्षा योजनाओं के लिए इडुक्की जिले में 52 ग्राम पंचायतें हैं। पंचायत के कार्य मुख्य रूप से विभिन्न निधियों के उपयोग का मूल्यांकन, पंचायतों के लिए धन जुटाने की प्रक्रिया की निगरानी, सभी जन्मों और विवाहों की व्यवस्था, गांव/शहर स्तर की पंचायत द्वारा बनाए गए उप-नियमों को मंजूरी देना और वितरण की देखरेख से जुड़े हैं। पीआरआई के कार्यान्वयन के बाद से, ग्राम पंचायत की गतिविधियों में काफी वृद्धि हुई है। जिससे सत्ता के विकेंद्रीकरण के कारण, ग्राम पंचायतों का दिन-प्रतिदिन का संचालन स्थानीय शासन और जिम्मेदारियों के उच्च स्तर पर हो गया है। चूंकि इडुक्की जिला सिद्ध विकासात्मक गतिविधियों वाले जिलों में से एक है, इसलिए इस लेख का उद्देश्य इस जिले में शासन का पता लगाना है। निर्वाचित महिला प्रतिनिधियों की चुनौतियों की पहचान करने के लिए, इस लेख ने पंचायत में 25 महिला नेताओं (अध्यक्षों) के साथ सीधे साक्षात्कार से एक अनुभवजन्य विश्लेषण किया। जैसा कि चित्र 2 में दिखाया गया है, लेख में उत्तरदाताओं के समक्ष आने वाली विभिन्न प्रकार की चुनौतियों का विश्लेषण किया गया है, जैसे व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन संतुलन, आर्थिक बाधाएं, लिंग रूढ़िवादिता, प्रशासनिक प्रशिक्षण, प्रतिनिधियों के बीच एकजुटता, राजनीतिक दल से संबद्धता की आवश्यकता और लिंग आधारित हिंसा।

जबकि परिवार-कार्य संघर्ष दोनों लिंगों का विषय है, कई लेखक केवल महिलाओं पर ध्यान केंद्रित करते हैं (पोलमैन, 2001)। मुख्य रूप से, महिलाओं को उनके द्वारा उठाए गए जिम्मेदारियों की मात्रा को देखते हुए बहुत अधिक संघर्ष करना पड़ता है, हालांकि माता-पिता की भागीदारी एक महिला के करियर के विकास में एक महत्वपूर्ण बाधा है। होशचाइल्ड (1997) का तर्क है कि पुरुष और महिला दोनों ही कार्यालय में अधिक समय बिताना और माता-पिता की जिम्मेदारियों से बचना पसंद कर सकते हैं। हालांकि, महिलाएं अपने बच्चों के साथ अधिक समय बिताती हैं जबकि पुरुष महिलाओं की तुलना में कार्यालय में काम करने के लिए अधिक प्रेरित होते हैं। अधिकांश महिलाएं ऐसे युग में पेशे, पारिवारिक जिम्मेदारियों को संभालती हैं जहाँ पुरुष सहकर्मी अलग-अलग काम करने में अधिक समय बिताते हैं (फिग्स, 1994)। तालिका 2 दिखाती है कि व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन को संतुलित करना महिलाओं के राजनीतिक करियर में कैसे बाधा डालता है। हालाँकि भारत में कई पहल और परियोजनाएँ हैं, लेकिन यह दुनिया के उन देशों में से एक है जहाँ महिलाओं की समानता का अभाव है। राजनीतिक भागीदारी में होने वाली चुनौतियों पर चर्चा करते समय, सभी उत्तरदाता इस बात पर सहमत होते हैं कि

घर और बच्चों की ज़िम्मेदारी संभालना उनके लिए राजनीतिक करियर में सक्रिय होने में एक महत्वपूर्ण बाधा है। चूंकि पंचायती राज प्रणाली की अधिकांश निर्वाचित महिला प्रतिनिधि विवाहित हैं और उनके बच्चे भी हैं, इसलिए साक्षात्कार के परिणाम बताते हैं कि एक महिला के राजनीतिक जीवन के लिए पतियों और पति के माता-पिता का सहयोग आवश्यक है।

तालिका 2. व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन संतुलन

संकेतक	दृढ़तापूर्वक सहमत	सहमत	दुलमुल	असहमत	दृढ़तापूर्वक असहमत
घरेलू ज़िम्मेदारियाँ	25	0	0	0	0
समय प्रबंधन	25	0	0	0	0
तनाव में काम करना	25	0	0	0	0
परिवार का समर्थन	24	0	0	1	0
राजनीति में परिवार	22	1	0	2	1
घर में निर्णय लेना	18	3	0	2	2

जब घरेलू काम रात में भी जारी रहते हैं, तो महिलाओं के पास आमतौर पर सामुदायिक विकास के लिए पर्याप्त समय नहीं होता है। कई महिला प्रतिनिधियों ने कहा कि उन्हें 2018 के इंडुक्की बाढ़ (न्यू इंडियन एक्सप्रेस) जैसी गंभीर स्थितियों के दौरान नुकसान को सीमित करने और जान बचाने के लिए विभागों में सहयोग करना पड़ता है। अधिकारियों, पार्टी सदस्यों और सहकर्मियों के साथ नियमित यात्रा और संचार तार्किक और भावनात्मक रूप से थका देने वाला था। हालाँकि, अधिकांश प्रतिभागियों (18) ने कहा कि राजनीति ने उनके आत्मविश्वास, सशक्तीकरण और व्यक्तिगत और सार्वजनिक स्वायत्तता को बढ़ाया है। एक 31 वर्षीय पेशेवर महिला नेता राजनीतिक जुड़ाव को सक्षम करने में परिवार की भूमिका पर विचार करती है, कहती है, "मेरी शादी से पहले मेरी कोई राजनीतिक रुचि नहीं थी।" राजनीतिक रूप से सक्रिय परिवार में शादी करने के बाद, मेरे पति ने मुझे स्थानीय स्वशासन के लिए चुनाव लड़ने के लिए प्रेरित किया। मैं उनके निरंतर समर्थन के कारण राजनीति में आई। मुझे संदेह है कि मैं अपने पति के समर्थन के बिना राजनीति के बारे में सोचती।"

विश्व आर्थिक मंच के 2018 के विश्लेषण में पाया गया कि राजनीतिक पदों पर महिलाओं की प्रणालीगत बाधाओं से निपटने के लिए एक विविध रणनीति की आवश्यकता है। सीमित वित्तीय संसाधन और उच्च दबाव, अनिश्चित राजनीतिक कार्य स्थितियाँ बड़ी बाधाएँ हैं। आर्थिक और संस्थागत सहायता से वंचित महिलाओं को पुरुषों की तुलना में इन प्रणालीगत बाधाओं का अधिक सामना करना पड़ता है। राजनीति के लिए वित्तीय पूंजी आवश्यक है, फिर भी कई देशों में, लिंग की परवाह किए बिना कई महत्वाकांक्षी नेताओं के लिए चुनाव प्रचार और पैरवी करना बहुत महंगा है। हालाँकि, नाइट एट अल। (2004) ने पाया कि महिलाओं के पास पारिवारिक संपत्ति और पार्टी के वित्तीय संबंध कम हैं, जिससे वे वंचित हैं। तालिका 3 से पता चलता है कि आर्थिक बाधाएँ महिलाओं को राजनीति में पूरी तरह से भाग लेने से रोकती हैं। सभी साक्षात्कारों में लोगों ने राजनीतिक करियर के लिए एक बड़ी बाधा के रूप में वित्तीय असुरक्षा का हवाला दिया।

तालिका 3. आर्थिक बाधाएँ

संकेतक	दृढ़तापूर्वक सहमत	सहमत	दुलमुल	असहमत	दृढ़तापूर्वक असहमत
--------	-------------------	------	--------	-------	--------------------

न्यून वेतन	25	0	0	0	0
प्रचार के लिए धन की कमी	24	1	0	0	0
गैर-कार्य समय में यात्रा करना	23	1	1	0	0
चुनाव में आर्थिक स्थिरता का अभाव	22	2	1	0	0
अलग-अलग नौकरियाँ करने में असमर्थता	20	1	1	2	1
स्वयं से खर्च	16	4	2	1	2

पंचायत की महिला नेताओं को सरकारी परियोजनाओं को कुशलतापूर्वक लागू करना चाहिए। हालांकि, उन्हें आम तौर पर सामुदायिक विकास, विशेष रूप से परिवहन और समन्वय के लिए व्यक्तिगत नकदी का उपयोग करना पड़ता है। आर्थिक तनाव अक्सर महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी में बाधा डालता है, चाहे उनकी आय कुछ भी हो। हाई स्कूल की डिग्री वाली 53 वर्षीय पंचायत अध्यक्ष ने अपना अनुभव साझा करते हुए कहा कि वित्तीय समस्याएं दीर्घकालिक राजनीतिक भागीदारी को हतोत्साहित कर सकती हैं। वह दो बच्चों और ससुराल वालों के साथ एक मध्यमवर्गीय परिवार से आती हैं। मेरे पति खेती करते हैं और मैं उनकी मदद करती हूँ। एलएसजी अध्यक्ष बनने के बाद से, खेती में मदद करने के लिए मेरा समय कम हो गया है, जिससे हमारे परिवार की आय कम हो गई है। इस प्रकार, यदि कोई महिला एक सफल राजनीतिक करियर बनाना चाहती है, तो उसके पास एक स्थिर आय होनी चाहिए या एक स्थिर परिवार से होनी चाहिए। सामाजिक पूर्वाग्रह के अन्य रूपों की तरह, लैंगिक रूढ़िवादिता वास्तविक दुनिया के व्यवहार के बारे में मान्यताओं पर आधारित होती है। जब पर्यवेक्षक किसी समूह को शारीरिक या नेतृत्व गतिविधि करते हुए देखते हैं, तो वे अक्सर सभी सदस्यों में विशेषताओं और दक्षताओं को सामान्यीकृत करते हैं।

रूढ़िवादिता अक्सर सामाजिक वर्ग जैसी प्रणालीगत असमानताओं का प्रतिनिधित्व करती है। लैंगिक असमानता को बनाए रखना या उसका समाधान करना सामाजिक संस्थाओं पर निर्भर करता है। तालिका 4 महिलाओं द्वारा सामना की जाने वाली कई लैंगिक-आधारित राजनीतिक गलतफहमियों को दर्शाती है। लैंगिक भेदभाव महिला राजनेताओं के सामने आने वाली सबसे बड़ी बाधाओं में से एक है। केरल अच्छे प्रशासन और सामाजिक विकास के लिए जाना जाता है, लेकिन पितृसत्तात्मक प्रथाएँ अभी भी जारी हैं। साक्षात्कार में शामिल हर महिला नेता ने कहा कि उन्हें आम तौर पर राजनीतिक पार्टी के निर्णय लेने और उच्च-स्तरीय बातचीत से बाहर रखा जाता है। पंचायती राज संस्थाओं (PRI) को स्थानीय शासन में लैंगिक समानता को बढ़ावा देने के लिए बनाया गया था, हालाँकि पुरुष सहकर्मियों के सहयोग की कमी कभी-कभी महिला नेताओं के सामुदायिक विकास उद्देश्यों में बाधा डालती है।

तालिका 4. लिंग रूढ़िवादिता

संकेतक	दृढ़तापूर्वक सहमत	सहमत	दुलमुल	असहमत	दृढ़तापूर्वक असहमत
पितृसत्ता	25	0	0	0	0
उच्च पदों के लिए कम अवसर	23	2	0	0	0
समाज उच्चतर मानकों की अपेक्षा करता है	23	2	0	0	0
उच्च स्तरीय पार्टी बैठकों में कम आवाज़	2	22	1	0	0
पुरुष प्रतिनिधियों का समर्थन	20	3	1	1	0

कठिन नहीं	19	4	1	0	1
महिलाएं कमज़ोर हैं	17	2	2	0	4
निर्णय लेने की क्षमता कम होना	15	3	2	1	4

लगभग 17 महिला प्रतिनिधियों ने इस बात पर सहमति जताई कि लिंग आधारित असमानता से यह धारणा बनती है कि महिलाएँ कमज़ोर हैं या उनमें नेतृत्व क्षमता की कमी है (19)। इस प्रकार, केरल के समाज को महिलाओं को असमर्थ मानने से लेकर उन्हें संभावित नेताओं के रूप में देखने तक के विचार को बदलना महत्वपूर्ण है। 41 वर्षीय स्नातक डिग्री धारक ने महिला नेतृत्व की सामाजिक स्वीकृति पर अपना दृष्टिकोण व्यक्त करते हुए कहा कि उन्हें रोज़ाना सांस्कृतिक कलंक का सामना करना पड़ता है, खासकर पंचायत के चुनाव करते समय। मेरे समुदाय के कुछ पुरुषों को लगता है कि महिलाओं में बड़े नीतिगत निर्णय लेने के लिए तर्कशीलता या साहस की कमी है। मुझे एक गंभीर नेता के रूप में दिखने के लिए एक मजबूत व्यक्तित्व का चित्रण करना पड़ा है - यहाँ तक कि अपनी आवाज़ भी बदलनी पड़ी है। इन मिथकों को समाज से मिटाना होगा।” अपनी विभिन्न सामाजिक स्थितियों और दायित्वों के कारण, पुरुष और महिलाएँ नेतृत्व को अलग-अलग तरीके से देखते हैं। पारंपरिक लैंगिक रूढ़ियाँ महिलाओं पर घरेलू और सामाजिक ज़िम्मेदारियों का बोझ डालती रहती हैं, जिससे उनकी आर्थिक और नागरिक भागीदारी सीमित हो जाती है। समय की कमी, श्रम की माँग और सीमित सामाजिक अपेक्षाएँ महिलाओं की सार्वजनिक मामलों में प्रभावी रूप से भाग लेने की क्षमता को सीमित करती हैं, जिससे व्यक्तिगत और सतत विकास के क्षेत्रों में उनकी आवाज़ दब जाती है (मखबाने, 2022)।

तालिका 5 दर्शाती है कि प्रशासनिक ज्ञान महिलाओं के राजनीतिक करियर और स्थानीय शासन नेतृत्व को कैसे प्रभावित करता है। पंचायत नेताओं को विकास परियोजनाओं और प्रशासनिक दायित्वों का प्रबंधन करने के लिए व्यावहारिक क्षमताओं की आवश्यकता होती है। कई महिला प्रतिनिधियों के पास ऐसी भूमिकाओं में पूर्व विशेषज्ञता का अभाव था, जिसके लिए लक्षित प्रशिक्षण की आवश्यकता थी। इसके अतिरिक्त, 23 उत्तरदाताओं ने जोर दिया कि सार्वजनिक सेवा वितरण और सामुदायिक जुड़ाव के लिए तकनीकी और प्रशासनिक कौशल आवश्यक हैं।

तालिका 5. प्रशासनिक कार्य और प्रशिक्षण

संकेतक	दृढ़तापूर्वक सहमत	सहमत	दुलभ	असहमत	दृढ़तापूर्वक असहमत
नेतृत्व	25	0	0	0	0
समझाने की क्षमता	25	0	0	0	0
सेवाओं का समान वितरण	25	0	0	0	0
तकनीकी कौशल	23	2	1	0	0
परियोजना कार्यान्वयन	22	3	0	0	0
निर्णयों पर पार्टी का प्रभाव	0	20	0	0	3

राज्य सरकार को नए विकास प्रस्ताव प्रस्तुत करने के लिए सक्षमता की आवश्यकता होती है। सर्वेक्षण में भाग लेने वाली अधिकांश महिला प्रतिभागियों ने कहा कि राजनीतिक दल का प्रभाव विकास प्रयासों में बाधा डालता है। महिला नेताओं को अक्सर ऐसे आदेशों का पालन करने के लिए दबाव का सामना करना पड़ता है जो जनता को लाभ नहीं पहुँचाते। उत्तरदाताओं ने सरकार द्वारा प्रदान किए जाने वाले प्रशिक्षण की आवश्यकता पर बल दिया जो इस कठिनाई को दूर करने के लिए पार्टी की माँगों की

परवाह किए बिना अपने समुदायों की निष्पक्ष और पारदर्शी तरीके से सेवा करने के लिए निर्वाचित अधिकारियों की प्रतिबद्धता को पुष्ट करता है। सभी महिला नेताओं ने इस चिंता को साझा नहीं किया। तीन उत्तरदाताओं ने राजनीतिक दल के दबाव को अस्वीकार कर दिया। एक नेता के अनुसार, पर्यावरण की दृष्टि से संरक्षित क्षेत्रों में विकास लाइसेंस को मंजूरी देते समय उन्हें कभी-कभी पार्टी के वरिष्ठ नेताओं के निर्देशों का पालन करना पड़ता था। मैंने एक निर्वाचित प्रतिनिधि के रूप में जनता की भलाई के खिलाफ काम करने से इनकार कर दिया। मुझे लगता है कि मुझे पार्टी की संबद्धता की परवाह किए बिना निष्पक्ष रूप से समाज की सेवा करनी चाहिए।”

अन्य व्यवसायों की तरह, राजनीतिक नेतृत्व के लिए भी टीमवर्क की आवश्यकता होती है। कबीर और लोपिता (2010) के अनुसार, नारीवादी दर्शन ने लंबे समय से महिलाओं के सामाजिक नेटवर्क को बढ़ाने, गठबंधन बनाने और लैंगिक समानता हासिल करने के लिए सामूहिक कार्रवाई के महत्व को रेखांकित किया है। वास्तविक दुनिया के राजनीतिक विभाजन अक्सर इस अवधारणा के साथ टकराव करते हैं। कई महिला नेताओं ने विचारधारा, पार्टी असहमति और सत्ता संघर्ष के कारण एकजुटता की कमी का हवाला दिया। तालिका 6 से पता चलता है कि अधिकांश उत्तरदाताओं ने दृढ़ता से सहमति व्यक्त की कि प्रभावी लोकतांत्रिक शासन के लिए राजनीतिक संबद्धता की परवाह किए बिना सभी शासी निकाय सदस्यों के योगदान की आवश्यकता होती है।

तालिका 6. प्रतिनिधियों के बीच एकजुटता

संकेतक	दृढ़तापूर्वक सहमत	सहमत	दुलभ	असहमत	दृढ़तापूर्वक असहमत
सामूहिक कार्रवाई	25	0	0	0	0
अनुमान	22	3	0	0	0
विश्वास	18	1	3	3	0
करुणामय	16	5	2	2	0
निर्णय लेने में स्वतंत्रता	14	8	2	1	0

राजनीतिक क्षेत्र में महिला प्रतिनिधियों के लिए सहकर्मियों का पक्षपातपूर्ण व्यवहार एक गंभीर चुनौती बना हुआ है। इस तरह के पूर्वाग्रह अक्सर उनके आत्मविश्वास को कम करते हैं और सक्रिय भागीदारी को हतोत्साहित करते हैं। एक सार्वजनिक संस्थान में, प्रभावी शासन और सामाजिक विकास के लिए सहयोग और सामूहिक निर्णय लेना महत्वपूर्ण है। हालाँकि, महिला नेताओं को अक्सर प्रशासनिक विभागों और राजनीतिक दलों के बीच सहयोग की कमी का सामना करना पड़ता है। यह अंतर उनके लिए राजनीतिक प्रक्रिया में विश्वास बनाना मुश्किल बनाता है। अध्ययन में सभी उत्तरदाताओं ने इस बात पर जोर दिया कि एकजुटता आवश्यक है - उनकी प्रशासनिक दक्षता में सुधार करने के लिए नीतियों को प्रभावी ढंग से लागू करने और अपने पंचायत के भीतर सार्थक विकास को बढ़ावा देने के लिए भी।

एक उत्तरदाता, एक 48 वर्षीय महिला जिसके पास स्नातक की डिग्री है, ने नेतृत्व में करुणा के महत्व पर प्रकाश डाला। उसने कहा:

“एक महिला नेता के रूप में, कई महिलाएँ और लड़कियाँ हिंसा के मामलों सहित व्यक्तिगत मुद्दों के बारे में सीधे मुझसे संपर्क करने में सहज महसूस करती हैं। वे अक्सर पुरुष अधिकारियों या वार्ड सदस्यों से बात करने में झिझकती थीं, खासकर जब मामला यौन शोषण से जुड़ा हो। एक प्रभावी नेता होने के लिए करुणा और सहानुभूति दिखाना महत्वपूर्ण है।”

तालिका 7 राजनीतिक दल की संबद्धता और महिलाओं के राजनीतिक करियर में इसकी भूमिका से संबंधित कई संकेतक प्रस्तुत करती है। क्लार्क (1979) के अनुसार, अभियान प्रवचन में राजनीतिक आयाम होते हैं जो विशिष्ट उद्देश्यों की पूर्ति करते हैं। व्यवहार में, इसे अक्सर एक अलिखित नियम माना जाता है कि पार्टी की सदस्यता के बिना, अगले चुनाव में सीट जीतना बहुत मुश्किल है - खासकर उन लोगों के लिए जिनके पास पहले से कोई राजनीतिक अनुभव नहीं है।

तालिका 7. राजनीतिक पार्टी संबद्धता

संकेतक	दृढ़तापूर्वक सहमत	सहमत	दुलभ	असहमत	दृढ़तापूर्वक असहमत
चुनाव में सीट	22	0	1	0	2
राजनीतिक गतिविधियों में भागीदारी	21	1	2	1	
समाज में स्वीकृति	19	1	1	3	1
चुनाव के लिए धन	18	1	2	1	3
चुनाव प्रचार के लिए समर्थन	18	2	0	2	3
मानव अधिकार वकालत	16	2	1	1	5
पैरवी	16	2	4	1	2

राजनीतिक नेतृत्व की भूमिकाएँ अक्सर महिलाओं को बाहर रखती हैं। हालाँकि, राजनीतिक दल में भागीदारी अक्सर महिलाओं को सामाजिक और मानवाधिकारों की चिंताओं में भाग लेने का मौका देती है, जिससे उनकी प्रमुखता बढ़ती है। अधिकांश उत्तरदाताओं (22) ने सहमति व्यक्त की कि एक राजनीतिक दल में शामिल होने से महिलाओं को नेता बनने और हाशिए पर पड़े समूहों की वकालत करने में मदद मिलती है। दो उत्तरदाताओं का दृढ़ विश्वास था कि नेतृत्व के लिए पार्टी की सदस्यता आवश्यक नहीं है क्योंकि उनके सामाजिक आंदोलनों और जमीनी प्रयासों ने उन्हें सामुदायिक नेता बना दिया है। उच्चतर माध्यमिक शिक्षा प्राप्त एक 40 वर्षीय महिला ने पार्टी निष्ठा पर विचार करते हुए कहा कि वह सीमित राजनीतिक जागरूकता वाली एक गृहिणी थी। शुरू में, मुझे पार्टी में बोलने में परेशानी हुई। हालाँकि, सामाजिक लामबंदी और विरोध प्रदर्शनों ने मुझे पहचान दिलाई। मैंने एलएसजी चुनाव जीता क्योंकि लोगों ने मुझे देखा। मेरी पार्टी के समर्थन ने मुझे एक राजनीतिक नेता बनने में मदद की।” लिंग आधारित भेदभाव और हिंसा महिलाओं के राजनीति में प्रवेश करने में एक और बड़ी बाधा है। यूएन वूमेन (2018) राजनीति में महिलाओं के खिलाफ हिंसा (वीएडब्ल्यूपी) को लिंग आधारित हिंसा (जीबीवी) और मानवाधिकार उल्लंघन के रूप में परिभाषित करता है जो समाज को नुकसान पहुंचाता है। हिंसा महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी में बाधा डालती है, लोकतांत्रिक अधिकारों को कम करती है और उन्हें नेतृत्व के पदों से दूर रखती है। तालिका 8 में महिलाओं के लिए कई राजनीतिक जीबीवी सूचीबद्ध हैं। बीस उत्तरदाताओं ने यौन उत्पीड़न, मौखिक दुर्व्यवहार और अवैध सोशल मीडिया पोस्टिंग का दावा किया। नीतिगत देरी से महिला नेताओं और उनके परिवारों पर सार्वजनिक आलोचना या हमले हो सकते हैं। इन दबावों के कारण शक्तिशाली महिलाएं भी राजनीति छोड़ने पर विचार करती हैं। अपमान और सुरक्षा जोखिमों के कारण राजनीतिक भागीदारी भावनात्मक और सामाजिक रूप से कठिन हो जाती है।

तालिका 8. लिंग आधारित हिंसा

संकेतक	दृढ़तापूर्वक सहमत	सहमत	दुलभ	असहमत	दृढ़तापूर्वक असहमत
--------	-------------------	------	------	-------	--------------------

व्यक्तिगत गरिमा को खतरा	20	2	0	3	0
मौखिक धमकी	6	8	9	1	1
साइबर बदमाशी	6	8	10	1	0
लिंगभेद	5	20	0	0	0
उत्पीड़न	4	21	0	0	0
जीता-जागता कारण देना	3	11	8	1	2
व्यक्तिगत गरिमा को खतरा	20	2	0	3	0

हालाँकि सोशल मीडिया और इंटरनेट उत्पीड़न वर्तमान में व्यापक नहीं है, फिर भी कई उत्तरदाताओं ने इन प्लेटफॉर्म के बारे में असुरक्षित महसूस किया।

एक उत्तरदाता, जो माध्यमिक शिक्षा प्राप्त 43 वर्षीय है, ने इस तरह की असुरक्षा के अपने व्यक्तिगत अनुभव को साझा किया:

“मेरी भूमिका में, मुझे कभी-कभी रात में यात्रा करने की आवश्यकता होती है। पिछले साल की बाढ़ के दौरान, मैं प्रभावित निवासियों के साथ एक राहत शिविर में रुकी थी ताकि उनकी सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके और स्वास्थ्य सेवा, आश्रय, भोजन और स्वच्छता जैसी आवश्यक सेवाओं का समन्वय किया जा सके। इसके लिए गैर सरकारी संगठनों, राजनीतिक दलों और सरकारी एजेंसियों के साथ मिलकर काम करना आवश्यक था।”

हालाँकि, संकट के बाद, मुझे पुरुष सहकर्मियों के साथ अपने संबंधों के कारण लैंगिक आलोचना और मेरी व्यक्तिगत गरिमा को खतरे का सामना करना पड़ा। इन अफवाहों के कारण मेरे परिवार में संघर्ष हुआ और दीर्घकालिक राजनीतिक करियर को आगे बढ़ाने के बारे में मेरे आत्मविश्वास पर गंभीर असर पड़ा।

केस स्टडी

भारत, दुनिया का दूसरा सबसे अधिक आबादी वाला देश है, यहाँ की कुल जनसांख्यिकी में महिलाओं की संख्या आधे से ज़्यादा है। फिर भी, राजनीतिक क्षेत्र में महिलाओं का प्रतिनिधित्व काफ़ी कम है। यह कम प्रतिनिधित्व लंबे समय से चली आ रही सामाजिक-सांस्कृतिक बाधाओं में गहराई से निहित है, जिसमें कठोर परंपराएँ, पितृसत्तात्मक मानदंड, जाति पदानुक्रम, धार्मिक रूढ़िवाद और पारिवारिक गतिशीलता का प्रभाव शामिल है। राजनीतिक दलों में पुरुषों का वर्चस्व महिलाओं को प्रभावशाली पदों तक पहुँचने से रोकता है, और अक्सर नेतृत्व के अवसर उनसे छीन लिए जाते हैं। पक्षपातपूर्ण कानून और राजनीतिक संस्थानों के भीतर बहिष्कार की प्रथा जैसी संरचनात्मक और संस्थागत बाधाएँ महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी के लिए रास्ता और भी संकीर्ण कर देती हैं। इसके अलावा, राजनीति में महिलाएँ अक्सर कई तरह की हिंसा का सामना करती हैं – मनोवैज्ञानिक धमकी और मानसिक उत्पीड़न से लेकर अधिक प्रत्यक्ष शारीरिक और यौन हिंसा तक (नंदा, 1999)। उच्च राजनीतिक कार्यालयों से उनका बहिष्कार प्रणालीगत समर्थन और निरंतर प्रोत्साहन की कमी के कारण होता है (ह्यूजेस और डब्रो, 2018)। ऐतिहासिक रूप से, भारतीय महिलाओं को घरेलू भूमिकाओं तक सीमित रखा गया है, जिससे राजनीतिक भागीदारी के लिए बहुत कम समय या सामाजिक स्थान बचता है। इस अंतर को पाटने के लिए, भारत सरकार ने पंचायती राज प्रणाली के माध्यम से जमीनी स्तर पर भागीदारी को संस्थागत रूप दिया, जो महात्मा गांधी के ग्राम स्वशासन के दृष्टिकोण से प्रेरित एक विकेन्द्रीकृत शासन ढांचा है। 1992 के 73वें संविधान संशोधन अधिनियम ने इस प्रणाली को औपचारिक रूप दिया, जिसमें गांव, ब्लॉक और जिला स्तर पर निर्वाचित स्थानीय निकायों के गठन को अनिवार्य बनाया गया। इन संस्थाओं

ने महिलाओं को-खासकर उन्हीं समुदायों की महिलाओं को जिनका वे प्रतिनिधित्व करती हैं-स्थानीय विकास के मुद्दों को संबोधित करने और लिंग आधारित भेदभाव को सक्रिय रूप से चुनौती देने में सक्षम बनाया है। केरल इस संदर्भ में एक आदर्श के रूप में सामने आता है, जहाँ 1994 के केरल पंचायती राज अधिनियम ने स्थानीय निकायों को अधिकार और संसाधनों का महत्वपूर्ण हस्तांतरण सक्षम किया। आज, केरल के विकेन्द्रीकृत शासन में 941 ग्राम पंचायतें, 152 ब्लॉक पंचायतें, 14 जिला पंचायतें, 87 नगर पालिकाएँ और 6 निगम शामिल हैं, जो सभी स्थानीय स्वशासन विभाग के तहत समन्वित हैं। इस संरचना ने प्रशासनिक दक्षता को बढ़ाया है, महिलाओं को राजनीतिक सशक्तिकरण और जमीनी स्तर पर नेतृत्व के लिए एक महत्वपूर्ण मंच भी प्रदान किया है।

निष्कर्ष

भारतीय राजनीति में महिलाओं की भागीदारी धीरे-धीरे बढ़ी है, फिर भी इसे गहरी लैंगिक पूर्वाग्रहों, सामाजिक मानदंडों और प्रणालीगत बाधाओं में निहित महत्वपूर्ण चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। इन बाधाओं के बावजूद, महिला नेताओं ने शासन और सामाजिक विकास में सार्थक योगदान देते हुए लचीलापन और क्षमता का प्रदर्शन किया है। राजनीतिक दल की संबद्धता अक्सर महिलाओं को नेतृत्व की भूमिकाओं तक पहुँचने और अपनी आवाज़ बुलंद करने में सक्षम बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। हालाँकि, लिंग आधारित हिंसा, भेदभाव और राजनीतिक संरचनाओं के भीतर एकजुटता की कमी जैसे मुद्दे उनकी निरंतर भागीदारी और विकास में बाधा डालते हैं। राजनीति में वास्तविक लैंगिक समानता को बढ़ावा देने के लिए, एक समावेशी वातावरण बनाना आवश्यक है जो महिलाओं के नेतृत्व का समर्थन करता है, पर्याप्त प्रशिक्षण प्रदान करता है और सामाजिक पूर्वाग्रहों का मुकाबला करता है। महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी को मजबूत करने से लोकतांत्रिक प्रतिनिधित्व को बढ़ावा मिलता है समाज के सभी वर्गों के लिए अधिक न्यायसंगत और उत्तरदायी शासन भी बनता है।

संदर्भ

1. बनर्जी, एम. (2014)। भारत में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी: चुनौतियाँ और अवसर। *जर्नल ऑफ पॉलिटिकल स्टडीज*, 21(2), 55-72।
2. छिब्बर, पी. के., और वर्मा, आर. (2018)। विचारधारा और पहचान: भारत की बदलती पार्टी व्यवस्था। *ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस*।
3. दास, एम., और मुखर्जी, एस. (2020)। लिंग और राजनीतिक भागीदारी: भारतीय महिला नेताओं का मामला। *इंडियन जर्नल ऑफ जेंडर स्टडीज*, 27(3), 321-340।
<https://doi.org/10.1177/0971521520942385>
4. देसाई, एम., और ठक्कर, यू. (2001)। भारतीय राजनीति में महिलाएँ। *ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस*।
5. जयल, एन. जी. (2013)। भारत में महिलाएँ और राजनीति। *ऑक्सफोर्ड कम्पेनियन टू पॉलिटिक्स इन इंडिया*, 227-244.
6. कबीर, एन. (2015)। भारत में लिंग, श्रम बाजार और महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी। *नारीवादी अर्थशास्त्र*, 21(3), 95-119.
<https://doi.org/10.1080/13545701.2015.1053495>

7. कोहली, ए. (2010). भारत में पहचान की राजनीति और महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी. एशियन जर्नल ऑफ सोशल साइंस, 38 (3), 405-423.
<https://doi.org/10.1163/156853110X521329>
8. राय, एस. एम. (2003). लिंग और उपस्थिति की राजनीति: भारत में महिलाओं का राजनीतिक प्रतिनिधित्व. राजनीति और लिंग, 1 (4), 673-693.
<https://doi.org/10.1017/S1743923X06060590>
9. श्रीवास्तव, पी. (2016). भारत में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी में बाधाएँ: एक सामाजिक-सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ सोशल साइंस स्टडीज़, 4 (2), 32-42.
10. यूएन वीमेन. (2018). राजनीति में महिलाओं के खिलाफ़ हिंसा: विशेषज्ञ समूह की बैठक की रिपोर्ट। लैंगिक समानता और महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए संयुक्त राष्ट्र इकाई।
<https://www.unwomen.org/en/digital-library/publications/2018/05/violence-against-women-in-politics>
11. ऑक्साल, जेड. (1997). शिक्षा और गरीबी: एक लैंगिक विश्लेषण (खंड 53)। ससेक्स-ससेक्स विश्वविद्यालय में विकास अध्ययन संस्थान।
12. पालासियोस, जे.एम. (2016). लोकतंत्र में समानता और विविधता: हम समावेशी लोकतंत्रीकरण कैसे कर सकते हैं। समानता, विविधता और समावेश: एक अंतर्राष्ट्रीय जर्नल।
13. पैटेमैन, सी. (1970)। भागीदारी और लोकतांत्रिक सिद्धांत। कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।
14. पोलमैन्स, एस. (2001)। कार्य-परिवार संघर्ष का एक बहु-स्तरीय, बहु-विधि अध्ययन: एक प्रबंधकीय परिप्रेक्ष्य। यूनिवर्सिटी ऑफ नवारा, स्पेन।
15. राज्यसभा सदस्य, भारत, <https://data.gov.in/keywords/female-membersrajya-sabha> पर उपलब्ध है